अध्याय-द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय – द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1.0 भूमिका

किसी भी क्षेत्र के अनुसंधान की प्रक्रिया में साहित्य का पुनरावलोकन महत्वपूर्ण कदम है। शोधकार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य है अनुसंधान की समस्या से सम्बद्ध उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोशों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता है। जब तक उसे ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है। गुडवार तथा स्केट्स कहते हैं–"एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधी आधुनिकतम् खोजों से परिचित होता रहें, उस प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र में संबंधित सूचनाओं से परिचित होना आवश्यक है।

2.2.0 विदेश में हुये शोधकार्य

बर्न्सटिन (1962)

आदिवासी भाषा संबंधी समस्या का अध्ययन किया और पाया कि छोटी कक्षा में बच्चों पर उनकी घरेलू भाषा का अधिक असर पड़ता है। इसके

लिए शिक्षकों को क्षेत्रीय भाषा का सहारा लेना चाहिए।

डेबून (1963)

के अनुसार, जो भी सुना व बोला जाता है वह वाचन व लेखन को प्रभावित करता है। इस बात का अध्ययन किया गया कई लेखकों ने श्रवण भाषा विकास को निम्न श्रेणियों में बाँटा है :-

1. आंतरिक भाषा।
2. ग्रहण की गयी भाषा।
3. भाषा को व्यक्त करना।

यह श्रेणीबद्ध व्यवस्था भाषा की कमियों को दूर करने में उपयोगी सिद्ध हुई। इसका अध्ययन मैककार्थ (1964) शैकेल बुच (1957), बुड (1964) एवं माइकल वस्ट (1965) द्वारा किया गया है। स्प्रोलिन (1967) ने सुझाव दिया कि कुछ बच्चे दो प्रकार की ध्वनियों में अंतर नहीं कर पाते हैं और कुछ बच्चे एक ही वाक्य के विभिन्न अर्थो को अलग-अलग नहीं कर पाते हैं।

स्माइले (1977)

ने 6-9 वर्ष आयु के उत्तम एवं मंद वाचकों पर अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि उत्तम एवं मंद वाचक की समझ और ज्ञान में अंतर उनके स्तर, ढाँचागत विशेषता से लगता है। मंद वाचक मौखिक वाचन में कमजोर है तो वे श्रवण वाचन में भी कमजोर है।

2.3.0 भारत में हुये शोधकार्य

इन्द्रपुरकर (1968)

चन्द्रपूर (महाराष्ट्र) के माध्यमिक विद्यालयों की भाषा संबंधी गलतियों का अध्ययन से संबंधित शोधकार्य किया और यह पाया कि :-

1. छात्रों के द्वारा शब्दों को बोलने में बार-बार गलतियाँ होती हैं।
2. मौखिक परीक्षण द्वारा यह भी पाया गया कि शब्दों के उच्चारण में भी बार-बार त्रुटियाँ होती हैं।

3. लिखित परीक्षण से यह पाया गया कि बच्चे सुनकर सही शब्द नहीं लिख पाते हैं।

कोडरर (1975)

अधिगमकर्ता की त्रुटियों की अर्थवत पर महत्वपूर्ण चर्चा प्रस्तुत की है। कोडरर का विश्लेषण इस महत्वपूर्ण धारणा पर अवलंबित है कि मातृभाषा अधिगम और द्वितीय भाषा अधिगम में कोई मूलभूत भेद नहीं है। शिशु द्वारा मातृभाषा अधिगम की प्रक्रिया की चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा है कि– "मातृभाषा अधिगमकर्ता बालक से कोई भी यह अपेक्षा नहीं रखता कि वह आरंभिक शुद्ध या अविचलित हो। हम उसके अशुद्ध वाक्यों को किसी बिन्दु पर उसके भाषा ज्ञान का विवरण प्रस्तुत करने वाले के लिए महत्वपूर्ण प्रमाण वस्तुतः त्रुटियाँ ही जुटाती है।"

आर. अग्निहोत्री (1978)

छोटे बच्चों में भाषा विकास विषय पर पी.एच.डी. स्तर पर शोधकार्य किया इन्होंने यह अध्ययन किया कि भाषा विकास पर विशेषकर सामाजिक, आर्थिक स्तर, लिंग और जन्म जाति का क्या प्रभाव पड़ता है। इन्होंने इस अध्ययन के द्वारा यह पाया कि सामाजिक आर्थिक स्तर और लिंग के आधार पर इनके भाषा विकास दर में कोई अंतर नहीं होता है। इस संदर्भ में सिंगलर (1986) का मत ही उचित लगता है कि बच्चों की शिक्षा तथा योग्यता विकास पर माता–पिता के सामाजिक स्तर का प्रभाव उतना नहीं पड़ता जितना उनकी जीवन शैली और दैनंदिन भाषा प्रयोग और सहायता का पड़ता है।

जयराम बी.डी. और मिश्रा जे.ए. (1980)

हिन्दी भाषा के माध्यम से अहिन्दी भाषी विद्यार्थियों की उपलब्धियों का अध्ययन किया। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों की उपलब्धि (शिक्षा) कितनी है तथा विद्यालय की शिक्षा प्रणाली पर क्या असर पड़ता है? पर अध्ययन किया गया है। विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की मातृभाषा विद्यालय में पढ़ाई

जानेवाली भाषा भिन्न होती थी। इसे दो वर्गों में विभाजित कर परीक्षण किया गया है।

➢ इन दो वर्गों में किसी भी प्रकार का कोई अंतर नहीं पाया गया। इन विद्यार्थियों की तुलना कक्षा 5,6 तथा 7 के हिन्दी विषय को पढ़कर की गई।

➢ इन दो वर्गों में सामाजिक शिक्षा विषय पर जिसका माध्यम हिन्दी था कोई अंतर नहीं पाया गया।

सुशीला मिश्रा (1982)

सामाजिक शैक्षिक स्तर के संदर्भ में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषा संपन्नता का अध्ययन नामक विषय पर शोधकार्य किया तथा इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि – भाषा का संरचनागत विकास सामाजिक शैक्षिक स्तर से प्रभावित नहीं होता। मानक भाषा के दृष्टिकोण से वर्तनी त्रुटि पर माता-पिता की उच्च शिक्षा का प्रभाव चौथी कक्षा तक सार्थक रूप से पड़ता है।

एस.सारसअम्मा (1984)

अहिन्दी भाषी कर्नाटक राज्य में कक्षा आठवीं स्तर पर विद्यार्थियों का हिन्दी के आधारभूत शब्द भंडार का अध्ययन नामक विषय पर शोधकार्य किया। इस अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए :–

1. हिन्दी के आधारभूत शब्द भण्डार में छात्र–छात्राओं का प्रदर्शन समान रहा। लेकिन छात्राओं का प्रदर्शन छात्रों की अपेक्षा ज्यादा नहीं है।
2. कन्नड़ एवं अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं का हिन्दी आधारभूत शब्द भण्डार में कोई विशेष महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है लेकिन अंग्रेजी माध्यम में पढ़ रहे छात्र–छात्राएं आंशिक रूप से कन्नड़ माध्यम में पढ़ रहे छात्र–छात्राओं की अपेक्षा श्रेष्ठ है।
3. हिन्दी के आधारभूत शब्द भण्डार में शासकीय तथा निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं में कोई विशेष अंतर नहीं है।

गुप्ता (1998)

कक्षा 2 के विद्यार्थियों की भाषा एवं गणित के अधिगम कठिनाईयों की प्रकृति का अध्ययन किया। यह अध्ययन म.प्र. के सीहोर जिले के 40 बच्चों पर किया गया। परिणामस्वरूप यह पाया कि पढ़ने तथा लिखने में बच्चे बहुत गलतियाँ करते हैं, मौखिक रूप से पठन प्रक्रिया में बच्चे बहुत कमजोर पाए गए। बहुत से बच्चे गद्यांश के प्रथम वाक्य को भी नहीं पढ़ सके। बच्चे शब्दों तथा वाक्यों को पहचानने में भी बहुत सी त्रुटियाँ करते हैं। पढ़ने के कौशल की तुलना में सुनने का कौशल बच्चों में अधिक था। बच्चों की कम उपस्थिति अभिभावकों का कम शिक्षित होना तथा गरीब होना भी अधिगम कठिनाई का प्रमुख कारण है।

श्रीवास्तव एवं अन्य (1999)

विकासखण्ड स्त्रोत केन्द्र तथा संकुल स्त्रोत केन्द्र को शैक्षिक पक्षों के द्वारा सुदृढ़ीकरण नामक प्रोजेक्ट में कक्षा पांच के 100 बच्चों पर हिन्दी भाषा उपलब्धि ज्ञान का अध्ययन किया तथा पाया कि 60 प्रतिशत बच्चे पढ़ने में, 30 प्रतिशत बच्चे बोलने में, 10 प्रतिशत बच्चे लिखने में तथा 30 प्रतिशत बच्चे मात्राओं में त्रुटियाँ करते हैं।

2.4.0 एम.एड. स्तर पर हुए शोधकार्य

कुसुम रस्तोगी (1969)

ने हिन्दी की अशुद्धियों का विवेचनात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोध किया। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह निकला कि मध्यमवर्गीय परिवारों के बच्चे ही अधिक अच्छा कार्य करते हैं। अशुद्धियों के लिए उत्तरदायी तीन बातें आवश्यक पायी गयी।

1. वृद्धि।
2. माता-पिता का इस ओर ध्यान न देना।
3. स्वयं बच्चों की लगन/अशुद्धियों पर संस्था एवं घर का प्रभाव पड़ता है।

वाजपेयी (1990)

माध्यमिक स्तर पर भोपाल नगर के छात्र–छात्राओं के हिन्दी उच्चारण दोष का समीक्षात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोधकार्य किया गया है इस अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला है कि छात्र–छात्राओं की मात्रा संबंधी त्रुटियों में सार्थक अंतर है। शब्द की गलतियों मन से पढ़े गए शब्द जिन शब्दों को छोड़ दिया, में बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। भिन्न भाषा भाषियों के कारण भी स्पष्ट ज्ञान नहीं होने के कारण उनके उच्चारण में दोष पाया गया।

मंजुलता श्रोती (2001)

सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की भाषा अधिगम संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन नामक शोधकार्य किया गया। इस अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए :–

1. सामान्य जाति के विद्यार्थी, अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा भाषा अधिगम में अधिक त्रुटियाँ करते हैं।

2. सामान्य जाति के विद्यार्थी एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में पठन के सम्बन्ध में अन्तर पाया गया है, पर वह अंतर वास्तविक न होकर संयोगवश है।

3. सामान्य जाति के विद्यार्थी अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा लेखन में अधिक त्रुटियाँ करते हैं।

उपर्युक्त सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के पश्चात् यह ज्ञान होता है कि इस क्षेत्र में हुए अध्ययनों से मिले–जुले परिणाम प्राप्त हुए हैं तथा अभी भी कई समस्याएँ व्याप्त हैं। अतः इस क्षेत्र में अध्ययन करने की आवश्यकता है।